E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

"भोपाल जिले में पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियं : उनका महत्व एवं वर्तमान समय में प्रासंगिकता

भोला सिंह गुर्जर
सहा. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग
शा.स्नातकोत्तर महा विद्यालय, दतिया

Paper Rcevied date

05/08/2025

Paper date Publishing Date

10/08/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.17108090

IMPACT FACTOR
5.924

सारांश

भोपाल शहर, 'झीलों का शहर' कहलाता है, जहाँ पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियाँ सदियों से जल संरक्षण, सिंचाई तथा सामाजिक–सांस्कृतिक विकास का आधार रही हैं। इस शोध में, झीलों, बावड़ियों, तालाबों, और वर्षा जल संचयन जैसी प्रणालियों की ऐतिहासिक यात्रा, उनके निर्माण की वास्तुकला एवं सामुदायिक योगदान की चर्चा की गई है। वर्तमान में, शहरीकरण, प्रदूषण एवं अत्यधिक जल दोहन के कारण जल संकट उत्पन्न हो रहा है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि पारंपरिक जल प्रबंधन तकनीकों का पुनरुद्धार, न केवल जल सुरक्षा के लिए आवश्यक है, बल्कि यह पारिस्थितिकीय संतुलन और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है। शोधपत्र के निष्कर्ष बताते हैं कि इन प्रणालियों का आधुनिक उपायों के साथ समन्वय कर भोपाल जिले में जल संकट का समाधान प्राप्त किया जा सकता है।

जल ही जीवन है मानव जीवन के लिये जल अत्यंत आवस्यक है प्राचीन काल से संस्कृतियाँ नदियों अथवा जल स्त्रोतों के किनार फली फूली, सिंधु सरस्वती सभ्यता के अध्ययन से पता चलता है ये लोग जल के महत्व से भली भांति परिचित थे। हड़प्पा सभ्यता से विशाल स्नानागार के साथ–साथ सिंधु नदी पर बनाए गए छोटे–छोटे बांधों के विषय में भी जानकारी मिलती है जिन पर जल स्तर को रोक कर वहां से सोना निकाला जाता था इसी प्रकार विभिन्न नालियों के माध्यम से पानी को निश्चित दिशा देना एवं नालियों के अंत में वलय कूपन को स्थापित कर सतही जल को भूमिगत जल में परिवर्तित कर देना हड़प्पा वासियों की दूरदर्शिता को प्रकट करता है।

महाभारत में भी जल संवर्धन के विषय में अनेक जानकारियां प्राप्त होती हैं यहां तालाब बनाने वाले को कुआं खोदने वाले से 100 गुना अधिक पुण्य मिलने का वर्णन मिलता है, संभवतः यह इसलिए था क्योंकि तालाब धरती में पानी पुनर्स्थापित करता है जबकि कुआं उससे पानी खींचता है। प्राचीन काल से ही कुएं बावड़ी एवं तालाब बनाने एवं नदियों पर बांध बनाने की परंपरा

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

देखने को मिलती है साथ ही तालाब निर्माण अथवा बांध निर्माण में सहयोग न करने वाले व्यक्ति को दंड देने का प्रावधान भी देखने के लिए मिलता है। प्रायः तालाबों का निर्माण इस प्रकार किया जाता था की ऊंचाई वाले स्थान के तालाब भरने के उपरांत पानी स्वतः निचले स्तर के तालाबों में जाकर एकत्रित होता था। स्ट्रेंवो के विवरण से पता चलता है कि मिस्र में भी नहरों के निर्माण एवं उन नहरों से निकलने वाली जल प्रणालियों के माध्यम से सिंचाई हेतु व्यवस्थाएं की जाती थी। तंमिल ग्रंथ शिल्पाधिक्कारम में चोल राजा करिकाल द्वारा स्थापित जलनिधियों एवं तटवंधों के विषय में जानकारी मिलती है। दिल्ली के पास स्थित आनंदपुर वांध जिसे आठवीं शताब्दी में राजा आनंगपाल के शासनकाल में बनाया गया था क्वार्ट्जाइट पत्थरों से निर्मित है जो अरावली पहाड़ियों से बहने वाली धाराओं को रोकता है और मानसून के जल का भंडारण करता है।

मध्यकाल तक आते–आते जल प्रबंधन से संबंधित संरचनाऐं थोड़ी जटिल एवं विकसित प्रकार की दिखाई देती हैं जहां भूमिगत सुरंगों के माध्यम से तालाबों और झीलों में जल का भंडारण किया जाता था इस प्रकार की रचनाऐं मध्य प्रदेश के बुरहानपुर और राजस्थान के जोधपुर में विशेष रूप से देखने को मिलती है। यह तालाव अथवा जल पुष्करणियां/वावडियां उपयोगिता के साथ–साथ सौंदर्यवाद से भी जुड़ी हुई है।

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में भी प्राचीन काल से जल प्रबंधन के प्रमाण मिलते है। शहर के मध्य में स्थित बडा तालाव मानव निर्मित एक झील है। इस तालाब का निर्माण 11वीं सदी में किया गया था। भोपाल की यह विशालकाय जल संरचना अंग्रेजी में अपर लेक कहलाती है। इसी को हिन्दी में बड़ा तालाब कहा जाता है। इसे एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम झील भी माना जाता है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के पश्चिमी हिस्से में स्थित यह तालाब भोपाल के निवासियों के पीने के पानी का सबसे मुख्य स्रोत है।

इसका निर्माण 11वीं सदी में परमार वंश के राजा भोज ने करवाया था। उपलब्ध ऐतहासिक अभिलेखों के आधार पर इसके निर्माण की कथा मिलती है। धार प्रदेश के प्रसिद्ध परमार राजा भोज एक असाध्य चर्मरोग से पीड़ित हो गए थे, तव एक संत ने उन्हें सलाह दी कि वे 365 स्त्रोतों वाला एक विशाल जलाशय बनाकर उसमें स्नान करें। साधु की बात मानकर राजा भोज ने राजकर्मचारियों को काम पर लगा दिया। इन राजकर्मचारियों ने एक ऐसी घाटी का पता लगाया, जो बेतवा नदी के मुहाने पर स्थित थी। लेकिन वहाँ केवल 356 सर–सरिताओं का पानी ही आता था। तब कालिया नाम के एक गोंड मुखिया ने पास की एक नदी की जानकारी दी, जिसकी अनेक सहायक नदियाँ थीं। इन सबको मिलाकर संत के द्वारा बताई गई संख्या पूरी होती थी। इस गोंड मुखिया के नाम पर इस नदी का नाम कालियासोत रखा गया, जो आज भी प्रचलित है। लेकिन राजा भोज की चुनौतियों का दौर अब भी समाप्त नहीं हुआ था।

बेतवा नदी का पानी इस विशाल घाटी को भरने के लिए पर्याप्त नहीं था। इसलिए इस घाटी से लगभग 32 किलोमीटर पश्चिम में बह रही एक अन्य नदी को बेतवा घाटी की ओर मोड़ने के लिए एक बांध बनाया गया। यह बांध आज के भोपाल शहर के नजदीक भोजपुर में बना था। इन प्रयासों से जो विशाल जलाशय बना, उसका नाम **भोजपाला** रखा गया। उसका विस्तार

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

65,000 हेक्टेयर था और कहीं–कहीं वह 30 मीटर गहरा था। यह प्रायद्वीपीय भारत का कदाचित सबसे बड़ा मानव–निर्मित जलाशय था। उसमें अनेक सुंदर द्वीप थे, और उसके चारों ओर खुबसूरत पहाड़ियाँ थीं।

कहा जाता है कि राजा भोज इस जलाशय में स्नान करके अपने रोग से मुक्त हो गए। राजा भोज द्वारा निर्मित विशाल जलाशय भोजपाला की वजह से ही इस शहर का नाम धीरे–धीरे भोजपाल और बाद में भोपाल हो गया। बेतवा नदी पर भोजपुर में जो मुख्य बांध बनाया गया था, वह पत्थरों से निर्मित था। इस बांध को 1443 ईस्वीं में होशंगशाह द्वारा तुड़वा दिया गया था। कहा जाता है कि उसके सैनिकों को बांध तोड़ने में 30 दिन लग गए। बांध के टूटने के बाद भी जलाशय को पूरा सूखने में 30 वर्ष लगे। तालाब की सूखी जमीन पर आज बसाहट है। कालान्तर में भोजपुर का बांध तोड़ दिया गया, लेकिन भोपाल में कमला पार्क के पास जो मिट्टी का बांध था, वह बच गया। उसके कारण एक छोटा जलाशय शेष रह गया। वर्ष 1694 में नवाब छोटे खान ने बड़े तालाब के पास बाण गंगा पर एक बांध बनवाया, जिसके कारण छोटा तालाब अस्तित्व में आया। यह दोनों तालाब आज भी दूरदर्शी राजा भोज की स्मृति को अमर बनाए हुए है।

वर्ष 1963 में भदभदा पर एक बांध बनाकर बड़े तालाब की जल संग्रहण क्षमता को बढ़ाया गया। इससे बड़े तालाब के पश्चिमी और दक्षिणी भागों के डूब क्षेत्र में वृद्धि हुई। बड़े तालाब का जल विस्तार क्षेत्र लगभग 31 वर्ग किलोमीटर है, जबकि छोटे तालाब का जल विस्तार क्षेत्र मात्र 1.29 वर्ग किलोमीटर है। इन तालाबों की औसत गहराई 6 मीटर है। कुछ स्थानों में गहराई 11 मीटर है। बड़े तालाब की जल संग्रहण क्षमता 1160 लाख घन मीटर है। यह पानी तालाब के जलग्रहण क्षेत्र में हुई वर्षा से आता है।

इन दोनों बड़ी–छोटी झीलों को केन्द्र में रखकर भोपाल का निर्माण हुआ था। भोपाल शहर के निवासी धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से इन दोनों झीलों से गहराई तक जुड़े हैं। रोजमर्रा की आम जरूरतों का पानी उन्हें इन्हीं झीलों से मिलता है, सिंघाड़े की खेती भी इस तालाब में की जाती है। स्थानीय प्रशासन की रोक और मना करने के बावजूद विभिन्न त्यौहारों पर देवी–देवताओं की मूर्तियाँ इन तालाबों में विसर्जित की जाती हैं। बड़े तालाब के बीच में श्तकिया द्वीपश है, जिसमें शाहअली शाह रहमतुल्लाह का मकबरा भी बना हुआ है, जो कि अभी भी धार्मिक और पुरातात्विक महत्व रखता है।

इस झील के आस–पास लगे हुए 87 गाँव और सीहोर जिले के भी कुछ गाँव इसके पानी से खेतों में सिंचाई करते हैं। इस इलाके में रहने वाले ग्रामीणों का मुख्य काम खेती और पशुपालन ही है। इनमें कुछ बड़े और कुछ बहुत ही छोटे–छोटे किसान भी हैं। भोपाल का यह बड़ा तालाब स्थानीय और बाहरी पर्यटकों को भी बहुत आकर्षित करता है। यहाँ बोट क्लब पर भारत का पहला राष्ट्रीय सेलिंग क्लब भी स्थापित किया जा चुका है। इस क्लब की सदस्यता हासिल करके पर्यटक कायाकिंग, कैनोइंग, राफ्टिंग, वाटर स्कीइंग और पैरासेलिंग आदि का मजा उठा सकते हैं। विभिन्न निजी और सरकारी बोटों से पर्यटकों को बड़ी झील में भ्रमण करवाया जाता है। इस झील के दक्षिणी हिस्से में स्थापित वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भी पर्यटकों के आकर्षण का एक और केन्द्र

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बड़े तालाब और इसके निकट ही छोटे तालाब में जैव–विविधता के कई रंग देखने को मिलते हैं। वनस्पति और विभिन्न जल आधारित प्राणियों के जीवन और वृद्धि के लिये यह जल संरचना एक आदर्श स्थल मानी जा सकती है। प्रकृति आधारित वातावरण और जल के चरित्र की वजह से एक उन्नत किस्म की जैव–विविधता का विकास हो चुका है। प्रतिवर्ष यहाँ पक्षियों की लगभग 20,000 प्रजातियाँ देखी जा सकती हैं, जिनमें मुख्य हैं– व्हाईट स्टॉर्क, काले गले वाले सारस, हंस आदि। कुछ प्रजातियाँ तो लगभग विलुप्त हो चुकी थीं, लेकिन आहिस्ता–आहिस्ता अब वे पुनः दिखाई देने लगी हैं।

वर्तमान समय में प्रासंगिकता :

आज, बढ़ती जनसंख्या, शहरी विस्तार, प्रदूषण, तथा भूजल दोहन से जल संकट गंभीर समस्या के रूप में उभर रही है। पुराने तालाब, बावड़ियाँ एवं चैनल उपेक्षा का शिकार हैं, परंतु इनके वैज्ञानिक पुनरुद्धार, वर्षा जल संचयन, तथा सामुदायिक सहभागिता, जल सुरक्षा हेतु अत्यंत आवश्यक हैं। तभी मानव प्रजाति को जल आपूर्ति संभव है। इसके लिये – ''झीलों और तालाबों का पुनरुद्धार'', ''समाज आधारित जल प्रबंधन'', ''पारंपरिक एवं आधुनिक तकनीकों का समावेश'' आवश्यक है।

निष्कर्षः

भोपाल जिले में पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियाँ न केवल ऐतिहासिक धरोहर हैं बल्कि वर्तमान जल संकट के परिप्रेक्ष्य में भी अत्यधिक प्रासंगिकता रखती हैं। इनके संरक्षण, पुनरुद्धार एवं समुदाय केंद्रित संचालन से दीर्घकालिक जल सुरक्षा संभव है। जल प्रबंधन नीतियों में इन प्रणालियों का समन्वय आवश्यक है।

संदर्भ सूचीः

1. सिंह, के.एस. "भोपाल का इतिहास और संस्कृति", मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण, 1996

2. भोपाल नगर निगम, "झील संरक्षण एवं प्रबंधन", 2023

3. जैन, एन "मध्य भारत की पारंपरिक जल संचयन प्रणालियाँ", जल विरासत अध्ययन पत्रिका, 2020

4. शर्मा, एस. "भोपाल में सामुदायिक जल शासन", दक्षिण एशिया जल अध्ययन, 2024

5. मध्य प्रदेश शासन "एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन नीति", 2024